आमोद कारखानिस

फूलों की दुनिया

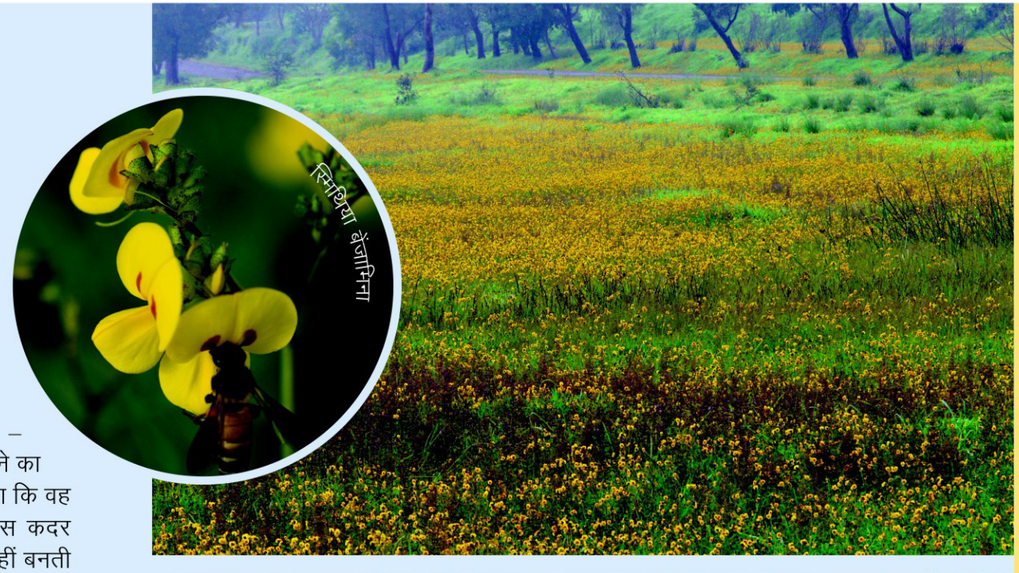

सतारा के पास का वह गाँव आ गया था – कास। बस रुकी। मैं बस से उतरा ही था। सामने का नज़ारा कुछ ऐसा था कि यकीन ही नहीं होता था कि वह है। मैं तुम्हें कैसे बताऊँ कि उस वक्त मैं किस कदर अभिभूत था। मैं डूब गया था कहूँ तो भी बात नहीं बनती और कहूँ कि मेरी आँखें झपकना भूल गई थीं....तो भी नहीं। यह बिल्कुल फिल्मी सीन था। कुछ वैसा ही मानो एक-दो बारिशों के बाद घास-पौधों की जगह सब तरफ फूल ही फूल खिल उठे हों!

मैं महाराष्ट्र के पश्चिम में बसे सतारा गाँव के एक पठार की बात कर रहा हूँ। पश्चिमी घाट में इस तरह के कई लैटेराइट पठार हैं। लेकिन यह बात और किसी भी पठार पर नज़र नहीं आती है। कुछ, 4,400 मीटर की ऊँचाई और कुछ, पहाड़ों की घेराबन्दी के चलते कास एक खास जगह बन गई है।

गर्मियों में शायद पत्थरों के बंजर पैच के सिवा यहाँ कुछ न मिले। लेकिन बारिश के आते ही यहाँ का माहौल एकदम बदल जाता है। पूरा पठार फूलदार पौधों से पट जाता है। हज़ारों-हज़ार, तरह -तरह के फूलों से। जैसे कि यह एक नज़ारा काफी नहीं था – बारिश के चार महीनों में फूलों के ये गलीचे कई बार बदलते हैं। थोड़े-थोड़े दिनों के लिए ही सही पर यहाँ कई तरह के फूल आते-जाते हैं। एक तरह के पौधों का जीवन खत्म होते ही, उनकी जगह दूसरे पौधे खिल उठते हैं। जैसे, दिखने और गुम होने का खो-खो का खेल चलता हो इनके बीच। बारिशों में कभी भी यहाँ आओ हर बार तुमको एक नया नज़ारा मिलेगा। कभी पीले *स्मिथिया बेंजामिना* (*Smithia benjamina*) मुस्कुरा रहे होंगे, और कभी *इरिओकोलन* (*Ereocolon*) के सफेद गेंदनुमा फूल। और कोई हिस्सा *उट्रिकुलेरिया* (*Utricularia*) के नीले-बैंगनी फूलों से लहलहाता दिखेगा।

रंगों की बौछार

इस पठार के एक बड़े हिस्से पर थोड़ी बहुत मिट्टी है। यह हिस्सा कारवी (*स्ट्रॉबिलैन्थस सैसिलस*)के छोटे-छोटे गुच्छों से भरा रहता है। इन पौधों पर तीन साल में एक बार फूल आते हैं। हम भाग्यशाली रहे क्योंकि यह फूल आने का साल है। इनके गुलाबी-बैंगनी फूलों से पूरा पठार भर गया है।

बालसम

साइनोटिस

इनमें से कई फूल सिर्फ इसी पठार पर मिलते हैं।

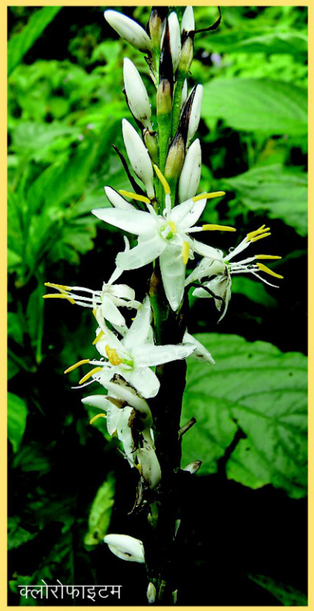
क्लोरोफाइटम

हेबेनारिया

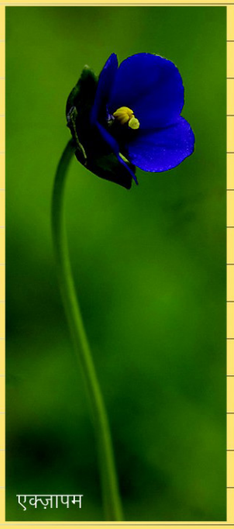
एक्ज़ापम

पैराकैरीऑप्सिस

कॉमलिना

मैं घास के बीच देख रहा था। तभी मेरा ध्यान चमचमाते कुछ पौधों पर गया। उनकी पतली-सी पत्तियों पर थमी ओस की बूँदें सुबह की धूप में चमक रही थीं। मैं देखता रहा। मैं इस जादू को समझने की कोशिश में लगा था। इतने में एक कीड़ा उन बूँदों को छूते हुए निकला। नहीं, निकला नहीं, बल्कि बूँदों में उलझ गया। बूँदों वाली यही डण्डी घूमी और उसने कीड़े को अपने में लपेट लिया। देखते ही देखते कीड़े का काम तमाम हो गया। तब जाकर मैं समझा कि वो ओस नहीं कोई चिपचिपा पदार्थ था। एक आकर्षक जादुई जाल। कीड़े को दबोचते ही पौधे में से पाचक रस निकले होंगे और कीड़े का अन्त हो गया। इस पौधे का नाम है ड्रॉसेरा या इंडियन सनड्यू प्लांट (Drocera या Indian sundew plant)।

सभी फोटोः आमोद कारखानिस

फोटोः आदेश शिवकर

सनड्यू प्लांट कास का इकलौता कीड़ा-खाऊ पौधा नहीं है। इसी तरह के एक अन्य पौधों का एक परिवार है - *सैरोपेजिआ*। सैरोपेजिया यानी मोम का फव्वारा। इसके फूलों को देख तुम्हें लालटेन याद आ जाएगी। कीड़े इसके फूलों की ओर खिंचते चले आते हैं। उन्हें क्या पता होता है कि इनकी अन्दर की सतह मोम से पुती होगी और उसमें इतनी फिसलन होगी! फिसलते हुए वे सीधे एक फूले हुए से इलाके में पहुँचते हैं। दीवारों की फिसलन उन्हें वापस ऊपर आने भी नहीं देती। निकल भागने की कोशिश में वो फूल के भीतर फड़फड़ाता रहता है। इससे फूल को उसे परागों से लपेट देने का भरपूर मौका मिलता है। फूल का काम खत्म होते ही वो खुलता है और कीड़ा उड़ लेता है। परागों से लदा-फदा यह कीड़ा दूसरे फूल में जा घुसता है। वहाँ भी पकड़म-पकड़ाई का यही खेल होता है। पहले फूल के परागों से इस फूल का परागण होता है। और फिर वो छूट जाता है। सैरोपेजिया की कई प्रजातियाँ हैं। अधिकाँश बेलें हैं। कुछ ज़मीनी पौधे भी हैं, जैसे यही *सैरोपेजिया जेनिया* जो केवल कास में ही मिलता है।

सैरोपेजिया जेनिया

दस साल पहले तक इस पठार के बारे में कम ही लोग जानते थे। इक्का-दुक्का ही कोई वनस्पतिशास्त्री कभी-कभार यहाँ आता था। लेकिन जानकारी फैलने के साथ ही यहाँ आने वालों की संख्या बढ़ने लगी। साथ ही यहाँ प्लास्टिक की थैलियाँ, कप, प्लेटें जमा होना शुरू हो गया है। अगर हम इस कचरे को बढ़ने से रोक पाए तभी यह जादू चलता रह सकेगा। और आसपास की दुनिया का करिश्मा आने वाले समय के लोग भी देख पाएँगे। चमक